पाठ 7. वारिस

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मक विचार संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे चीज़ों व घटनाओं को देखने और करने का अभिनव तरीका अपना सकें। हिंदी उपन्यासकार मोहन राकेश ने 'वारिस' कहानी में साधनविहीन किंतु सच्चे कर्तव्यनिष्ठ अध्यापक का चित्र अंकित किया है। स्थितियों के कारण विवश किंतु स्वाभिमानी व्यक्ति का अध्यापक की भूमिका में लेखक को और उसकी बहन को पढ़ाना तथा लेखक के पिता द्वारा मास्टर जी के अस्वस्थ होने पर अपने पुत्र को उनकी सेवा में उनके पास भेजना, आदि प्रसंगों के माध्यम से लेखक मध्यमवर्गीय जीवन मूल्यों के सकारात्मक पक्ष से पाठक का परिचय कराता है।

पाठ का सार

मास्टर जी, लेखक और उनकी बहन को अंग्रेज़ी पढ़ाने आते हैं। वे ऐसा अपनी आर्थिक तंगी के कारण करते हैं। मास्टर जी नियमबद्ध, परिश्रमी किंतु भावुक प्रकृति के स्वाभिमानी प्राणी हैं। मास्टर जी के बीमार होने पर लेखक के पिता ने अपने पुत्र अर्थात् लेखक को मास्टर जी की सेवा करने का दायित्व सौंपा। मास्टर जी की किराये की कोठरी में जाकर और कुछ समय रहकर ही लेखक ने उनके जीवन की परिस्थितियों को एक सीमा तक देखा-जाना।

लेखक के पिता जी ने एक अवधि तक ही मास्टर जी की सेवाएँ लेने की सूचना बच्चों के माध्यम से मास्टर जी तक पहुँचाई। मास्टर जी संभवत: कुछ आहत भी हुए होंगे। जाते-जाते अपनी कलम को विरासत के रूप में मास्टर जी लेखक को दे गए। लेखक ने उस रूप में शायद कलम की सुरक्षा देर तक न की हो लेकिन कहानी में व्यक्त संवेदनशीलता बताती है कि लेखक के लेखक होने में जीवनानुभवों की ही भूमिका विशेष रूप से रही है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  कहानी के संबंध में, कहानी का आंशिक परिचय देते हुए वातावरण तैयार करने के बाद रचना का मौन-मुखर व आदर्श अनुकरण वाचन करवाएँ।

  यथाप्रसंग शब्दों के अर्थ बताते हुए कतिपय अंशों की व्याख्या भी करें। अध्यापक/अध्यापिका से संबंधित बच्चों के संस्मरण सुनें-सुनाएँ। कबीर की पंक्तियाँ 'यह तन विष . . .' और 'गुरु गोबिंद . . .' का अर्थ अवश्य बताएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 79** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - बच्चों को कारक व कारक परसर्ग के बारे में बताएँ। करण कारक व अपादान कारक के परसर्ग की पहचान करते समय सावधानी की ज़रूरत होती है अत: इन दोनों कारकों के बारे में विशेष रूप से बताएँ। इसी प्रकार, 'के लिए' परसर्ग कभी-कभी कर्म के परसर्ग के रूप में भी प्रयुक्त होता है, उदाहरण देकर इस बिंदु को समझाएँ।
  - प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाओं में अंतर समझाएँ। कुछ उदाहरणों के माध्यम से इसे स्पष्ट करें।

- ❖ देशज और विदेशज शब्दों के बारे में तथा विदेशज शब्दों के स्रोतों के बारे में चर्चा करें।

क्रियाकलाप के लिए संकेत

- ❖ स्वाभिमानी व्यक्ति के बारे में जानने के पहले बच्चों को ज्ञान दें कि स्वाभिमान और अभिमान/घमंड में क्या अंतर होता है।
- ❖ बच्चे स्कूल से अनुपस्थित रहने, कक्षा से गायब रहने, आदि के लिए तरह-तरह का बहाना बनाते हैं। ऐसे कार्य करने के लिए बच्चों को हतोत्साहित करें ताकि पढ़ाई के प्रति उनमें लगन व रुचि पैदा हो सके।